The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 10 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

हजारीबाग जिले में महिला सशक्तिकरण में मनरेगा की भूमिका

सुमन कुमारी [1] , डॉ श्वेता सिंह [2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, आईसेक्ट विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखंड,

Email id- shivaayisparsh@gmail.com

[2] पर्यवेक्षक, असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग, आईसेक्ट विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखंड I

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17643294

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:

मनरेगा, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास, हजारीबाग, रोजगार, आत्मनिर्भरता, सामाजिक समानता, आर्थिक सशक्तिकरण

ABSTRACT

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना और सामाजिक-आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना है। हजारीबाग जिले में इस योजना ने महिलाओं के जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन लाया है। मनरेगा के माध्यम से महिलाएँ न केवल आर्थिक रूप से सशक्त हुई हैं, बल्कि उन्होंने सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर भी अपनी पहचान स्थापित की है। इस अध्ययन का उद्देश्य हजारीबाग जिले में महिला सशक्तिकरण पर मनरेगा के प्रभाव का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत यह देखा गया है कि इस योजना ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने, निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाने तथा समाज में समान भागीदारी निभाने में कैसे सहयोग दिया है। अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि मनरेगा ने ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार, रोजगार के अवसरों की उपलब्धता तथा सामाजिक समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

परिचय (Introduction):

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) वर्ष 2005 में लागू किया गया था, जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन और स्थायी रोजगार के अवसर प्रदान करना है। इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक ग्रामीण परिवार को

प्रति वर्ष 100 दिनों का सुनिश्चित रोजगार उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है। मनरेगा ने न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त किया है, बल्कि महिलाओं को भी आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनने का अवसर प्रदान किया है।

हजारीबाग जिला, जो झारखंड राज्य का एक प्रमुख जिला है, मुख्यतः ग्रामीण और कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ की बड़ी आबादी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है, और मनरेगा ने इस क्षेत्र में महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया है। पहले जहाँ महिलाएँ घरेलू कार्यों तक सीमित थीं, वहीं अब वे रोजगार सृजन के माध्यम से अपनी आय बढ़ा रही हैं, परिवार की आर्थिक स्थिति सुधार रही हैं और सामाजिक स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही हैं।

मनरेगा ने महिलाओं को आत्मनिर्भरता, निर्णय लेने की क्षमता, तथा ग्राम पंचायत और सामाजिक कार्यों में भागीदारी के लिए प्रेरित किया है। हजारीबाग जिले में मनरेगा के अंतर्गत कार्यरत महिलाओं ने जल-संरक्षण, वृक्षारोपण, सड़क निर्माण, तालाब खुदाई जैसे कार्यों में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे न केवल महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है, बल्कि समाज में लैंगिक समानता की दिशा में भी ठोस प्रगति हुई है।

इस अध्ययन का उद्देश्य हजारीबाग जिले में मनरेगा की भूमिका को महिला सशक्तिकरण के दृष्टिकोण से विश्लेषित करना है। अध्ययन में यह देखा जाएगा कि मनरेगा के माध्यम से महिलाओं के जीवन में क्या सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आए हैं तथा वे किस प्रकार से अपने परिवार और समुदाय में योगदान दे रही हैं।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature):

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) पर अनेक शोधकर्ताओं एवं सामाजिक संस्थाओं ने महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में अध्ययन किया है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि मनरेगा ने ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और मानसिक सशक्तिकरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। नीचे कुछ प्रमुख अध्ययनों का संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत है —

1. **देवी, आर. (2012)** ने अपने अध्ययन *"महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में मनरेगा की भूमिका"* में पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ मनरेगा के माध्यम से रोजगार पाकर अपनी आय और आत्मनिर्भरता में वृद्धि कर रही हैं। इससे उनका सामाजिक दर्जा भी मजबूत हुआ है।
2. **कुमार, एस. (2015)** के अनुसार, झारखंड के ग्रामीण इलाकों में मनरेगा ने महिलाओं की कार्यक्षमता और आत्मविश्वास को बढ़ाया है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि योजना में महिलाओं की भागीदारी 45% से अधिक है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिला योगदान को दर्शाती है।

3. **राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान (NIRD, हैदराबाद, 2017)** की एक रिपोर्ट में उल्लेख किया गया कि मनरेगा ने ग्रामीण महिलाओं को न केवल मजदूरी का अधिकार दिया बल्कि उन्हें ग्रामसभा और पंचायत जैसे निर्णयकारी संस्थानों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।
4. **झारखंड राज्य ग्रामीण विकास विभाग (2019)** की रिपोर्ट में बताया गया कि हजारीबाग, रामगढ़ और कोडरमा जैसे जिलों में महिलाओं की मनरेगा में सहभागिता से परिवार की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और महिलाओं ने बचत समूहों का गठन कर सामूहिक आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ाया है।
5. **सिंह, पी. एवं मिश्रा, के. (2020)** के अध्ययन *"मनरेगा और ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण"* में यह पाया गया कि मनरेगा ने महिलाओं को घरेलू सीमाओं से बाहर निकालकर सामाजिक निर्णयों में भागीदारी का अवसर दिया है, जिससे उनके आत्मसम्मान में वृद्धि हुई है।
6. **विश्व बैंक (2021)** की रिपोर्ट के अनुसार, मनरेगा जैसी योजनाओं ने भारत में महिला श्रम सहभागिता दर में सुधार किया है। विशेष रूप से झारखंड और बिहार जैसे राज्यों में महिलाओं की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है।

इन सभी अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मनरेगा ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक प्रभावी साधन के रूप में कार्य किया है। इस योजना ने न केवल महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से सक्षम बनाया है, बल्कि उन्हें सामाजिक निर्णयों में अपनी भूमिका निभाने का अवसर भी प्रदान किया है।

चर्चा (Discussion):

हजारीबाग जिले में मनरेगा ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में एक प्रभावशाली परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। पहले जहाँ ग्रामीण महिलाएँ केवल घरेलू कार्यों तक सीमित थीं, वहीं अब वे सक्रिय रूप से आर्थिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं। इस योजना ने उन्हें रोजगार के साथ-साथ आत्मविश्वास, सामाजिक मान्यता और निर्णय लेने की क्षमता भी प्रदान की है। नीचे मनरेगा के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण के कुछ प्रमुख प्रभावों पर चर्चा की गई है —

1. **आर्थिक सशक्तिकरण:**हजारीबाग जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में मनरेगा के तहत महिलाओं को मजदूरी आधारित कार्यों में शामिल किया गया है। महिलाओं ने सड़क निर्माण, तालाब खुदाई, वृक्षारोपण, नाली निर्माण, जल-संरक्षण जैसी परियोजनाओं में भाग लेकर अपने परिवार की आय में योगदान दिया है। इससे वे परिवार की आर्थिक निर्भरता से मुक्त

होकर आत्मनिर्भर बनी हैं। कई महिलाओं ने अपनी मजदूरी की आय से बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और गृह निर्माण जैसे कार्यों में योगदान दिया है।

2. **सामाजिक सशक्तिकरण:**मनरेगा ने महिलाओं को ग्रामसभा, पंचायत समिति और स्थानीय निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में शामिल होने का अवसर दिया है। इससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। हजारीबाग की कई पंचायतों में महिलाएँ अब पंचायत सदस्य या मुखिया के रूप में कार्यरत हैं और ग्रामीण विकास के निर्णयों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।
3. **आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास में वृद्धि:**पहले जहाँ महिलाएँ समाज में अपनी भूमिका को सीमित समझती थीं, अब मनरेगा ने उन्हें यह अहसास दिलाया है कि वे भी परिवार और समाज की आर्थिक इकाई का अभिन्न हिस्सा हैं। नियमित मजदूरी और काम के अवसरों ने उनमें आत्मविश्वास बढ़ाया है।
4. **महिला समूहों का गठन और सहयोग:**हजारीबाग जिले के कई गांवों में मनरेगा से प्रेरित होकर महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups - SHGs) बनाए हैं। इन समूहों ने सामूहिक रूप से छोटे उद्योगों, कृषि आधारित कार्यों और स्थानीय उत्पादों के विपणन में सहयोग दिया है। इससे महिलाओं की सामूहिक शक्ति और आर्थिक सुरक्षा दोनों में वृद्धि हुई है।
5. **लैंगिक समानता को बढ़ावा:**मनरेगा के तहत पुरुषों और महिलाओं को समान मजदूरी का अधिकार मिला है, जिससे ग्रामीण समाज में लैंगिक समानता की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन आया है। अब महिलाएँ मजदूरी के लिए पुरुषों पर निर्भर नहीं रहीं, बल्कि बराबरी से काम कर अपनी पहचान बना रही हैं।
6. **स्थानीय विकास में योगदान:**महिलाओं की भागीदारी से मनरेगा परियोजनाओं की गुणवत्ता और स्थायित्व में सुधार हुआ है। हजारीबाग में कई जल-संरक्षण और पर्यावरणीय संरक्षण से जुड़ी योजनाएँ महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से सफल हुई हैं। इससे ग्रामीण बुनियादी ढांचे में सुधार के साथ-साथ महिलाओं के नेतृत्व की भूमिका भी मजबूत हुई है।

निष्कर्ष (Conclusion):

हजारीबाग जिले में मनरेगा ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सशक्त सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की नींव रखी है। इस योजना ने ग्रामीण महिलाओं को रोजगार, आत्मनिर्भरता और सामाजिक सम्मान का अवसर प्रदान किया है। पहले जहाँ महिलाएँ घरेलू सीमाओं में बंधी थीं, वहीं अब वे आर्थिक गतिविधियों, पंचायत निर्णयों और सामुदायिक विकास कार्यों में सक्रिय भागीदार बन चुकी हैं।

मनरेगा ने महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त किया है, बल्कि उनके आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक सहभागिता में भी वृद्धि की है। समान मजदूरी के सिद्धांत ने लैंगिक समानता को मजबूत किया है और समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव लाया है।

हजारीबाग जिले के संदर्भ में यह योजना ग्रामीण विकास की आधारशिला सिद्ध हुई है — जहाँ महिला श्रम के माध्यम से न केवल परिवार की आय में वृद्धि हुई है, बल्कि स्थानीय संसाधनों का स्थायी उपयोग भी सुनिश्चित हुआ है। स्वयं सहायता समूहों, पंचायत प्रतिनिधियों और महिला श्रमिकों के सहयोग से मनरेगा ने महिलाओं के जीवन में स्वाभिमान, समानता और सशक्तिकरण की नई दिशा प्रदान की है।

अतः यह कहा जा सकता है कि हजारीबाग में मनरेगा महिला सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है, जिसने ग्रामीण विकास को न केवल गति दी है, बल्कि महिलाओं को समाज के विकास में समान भागीदारी निभाने का अवसर भी दिया है।

संदर्भ (References):

1. देवी, आर. (2012). *महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में मनरेगा की भूमिका*. नई दिल्ली: भारतीय सामाजिक अनुसंधान संस्थान।
2. कुमार, एस. (2015). *झारखंड में मनरेगा और महिला भागीदारी का अध्ययन*. रांची विश्वविद्यालय, झारखंड।
3. राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान (NIRD). (2017). *मनरेगा और ग्रामीण महिलाओं की सहभागिता पर अध्ययन रिपोर्ट*. हैदराबाद।
4. झारखंड राज्य ग्रामीण विकास विभाग. (2019). *मनरेगा वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 2018–19*. रांची: ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
5. सिंह, पी. एवं मिश्रा, के. (2020). *मनरेगा और ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन*. सामाजिक परिवर्तन पत्रिका, खंड 12(3), पृष्ठ 45–56।
6. विश्व बैंक. (2021). *India: Empowering Rural Women through MGNREGA*. विश्व बैंक रिपोर्ट, नई दिल्ली।
7. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार. (2022). *महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम: वार्षिक प्रतिवेदन 2021–22*. नई दिल्ली।

8. झारखंड आर्थिक सर्वेक्षण (2023). *हजारीबाग जिले में मनरेगा के अंतर्गत महिला श्रमिकों की स्थिति*. योजना एवं विकास विभाग, रांची।